

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमद्गोपालार्य महादेशिकैः अनुगृहीतम्
॥ श्री देशिक दिव्यसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री देशिक दिव्यसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

ध्यानम्

अखिलभुवन रक्षा साधनायावतीर्णे
कुमति कलिविलासध्वान्त तिग्मांशुजाले ।
निरवधिकरुणाब्धौ वेदचूडागुरौ मे
भवतु परमभक्तिः श्रीनिधौ वेङ्कटेशे ॥ 1 ॥

अस्मद्देशिकतद्गुरून् श्रुतिशिरश्चूडार्यरामानुजौ
रङ्गेशं रघुपुङ्गवानुजगुरुं श्रीमन् नतार्तिच्छिदम् ।
श्रीरामानुज पूर्णयामुनमुनीन् रामारविन्देक्षणौ
नाथ श्रीशठकोप सैन्यरमणा श्री श्रीपतीन् भावये ॥ 2 ॥

श्रीमत् त्रयीशेखरदेशिकस्य
नाम्नां सहस्रं गुणतः क्रियातः ।
प्रख्यातमख्यातिनिरासि सर्व
संपत्प्रदं साधुमुदे तनोति ॥ 3 ॥

स्तोत्रारम्भः

वेङ्कटेश कृपालब्धानन्तार्य स्वप्न चिन्तितः ।
तोतारम्बागर्भसूर्यसङ्ख्याध्वावासभासुरः ॥ 1 ॥

मधुसूदन रङ्गेश साकूतेक्षित जन्मकः ।
नभस्य श्रवण श्रीश तीर्थ वासर जन्मवान् ॥ 2 ॥

दीपप्रकाश निकट सद्भाविर्भाव भासुरः।
श्रीश घण्टावतारत्व ज्ञापकानेक युक्तिमान् ॥ 3 ॥

पुण्डरीकाक्षाख्य यज्व पौत्रोऽनन्तार्य पुत्रकः।
आत्रेयवादिहंसाम्बु वाहार्य भगिनीसुतः ॥ 4 ॥

स्वस्व कालानन्तगुरु कृतजातक्रियादिकः।
अनन्तार्य कृत श्रीमद्वेङ्कटेशाभिधानकः ॥ 5 ॥

वरदाचार्य रामानुजार्योभय कृपेक्षितः।
विश्वामित्रान्वयाब्धीन्दुर्जगत्पुण्य महाफलम् ॥ 6 ॥

अनन्तार्याऽऽचार्य रत्न कृतोपनय संस्कृतिः।
वादिहंसाम्बुवाहार्य कृत तापादि संस्कृतिः ॥ 7 ॥

अधीत साङ्ग सशिरस्का कृत्रिम सरस्वतिः।
वादिहंसाम्बुवाहार्य सम्प्राप्ताखिल शास्त्रधीः ॥ 8 ॥

कणाद तन्त्र पारीण आक्षपादीय गौतमः।
मीमांसा मांसलो व्याकरण तन्त्र पतञ्जलिः ॥ 9 ॥

काव्यालङ्कार तत्त्वज्ञः कवितार्किक केसरी।
यतिराज पदाम्भोजद्वन्द्व माध्वी मधुव्रतः ॥ 10 ॥

यामुनार्य प्रेममूर्तिः नाथयोगीश नाथवान्।
पराङ्कुश पदासक्तः परकालाङ्घ्रिभक्तिमान् ॥ 11 ॥

श्रीपराशरभट्टार्य मेघसूक्त्यम्बु चातकः।
श्रीवत्सचिह्न मिश्रेन्दु सूक्तिज्योत्स्ना चकोरकः ॥ 12 ॥

एकान्तवासरसिको द्वयचिन्ता परायणः।
त्रिरागघ्नश्चतुष्पाण्डित्य निर्विण्णैक मानसः ॥ 13 ॥

पञ्चप्रकार सन्तुष्टिः षडूर्मि ध्वंस कोविदः।
सप्त व्यसन तत्याग तत्स्वीकार विशारदः ॥ 14 ॥

अष्टाङ्ग भक्तिधीरष्ट पुष्पीष्टाष्टाङ्ग योगकः।
नवव्याकृति वित् श्री भाष्याद्य पद्य दशार्थवित् ॥ 15 ॥

शताभ्यधिक षट्पञ्चाशत् त्रयी मौलि नीतिवित्।
सहस्राधिकृति न्याय विवेचन धुरन्धरः ॥ 16 ॥

लक्षकोटि स्वप्रभावांशानर्ह भजन स्थितिः।
कामक्रोधादि निखिल दुरात्म गुण वर्जितः ॥ 17 ॥

भारताद्युक्त सकल सदात्म गुणभूषितः।
शास्त्रोक्त सकलाचार्य लक्ष्मावास वरस्थली ॥ 18 ॥

श्रीवैष्णवानेक लक्ष्म शोभित स्वर्णविग्रहः।
अगस्त्य शाक प्रमुख सात्त्विकाहार भासुरः ॥ 19 ॥

श्रीरामानुज सिद्धान्त स्थापनाचार्य तल्लजः।
देवनायक भद्राशीरर्थाहीन्द्र पुरस्थितः ॥ 20 ॥

तार्क्ष्यमन्त्र जपप्रीत तार्क्ष्यदत्त वरप्रियः।
तार्क्ष्य दत्त हयग्रीव मनुप्रीत हयाननः ॥ 21 ॥

वागर्थ सिद्धिद हयग्रीव स्तोत्र विधायकः।
हयास्यदत्त लालामृतास्वादन सुपोषितः ॥ 22 ॥

तार्क्ष्याज्ञा कृत तार्क्ष्यैक पञ्चाशत् प्रीततार्क्ष्यकः।
देवनायक पञ्चाशत् स्तुति सम्पन्न सत्यवाक् ॥ 23 ॥

प्राकृतोक्त्यच्युत शता प्राकृतानन्त संस्तुतिः।
श्रीमत् त्रिमणि सम्प्रोत गाथासर विधायकः ॥ 24 ॥

कृत कन्दुकगाथः कुबेराक्षि गीतिकारकः।
घुटिका गीतिकृडुला गाथाकृति विशारदः ॥ 25 ॥

उपालम्बाह्वय श्रीमत् गाथाकृति विचक्षणः।
नवरत्न स्रग्विधाता परदर्शन भङ्गकृत् ॥ 26 ॥

पुराणोक्तानेक तत्त्व सृष्टि क्रम निरूपकः।
परकालकृत स्वर्ण बिम्ब स्थेया विरोधदृक् ॥ 27 ॥

स्वतन्त्राष्टोत्तरशतविरोध परिहारवित्।
रघुपुङ्गव गद्यस्रक् कृतगोपालविंशतिः ॥ 28 ॥

गोपपूर्गति भद्राशासन दुष्ट त्रिविक्रमः।
देहलीश स्तुतिप्रीतातिभक्त स्तुत माधवः ॥ 29 ॥

हस्तिशैलेश पञ्चाशत् स्तुत नागाचलेश्वरः।
श्रीचिह्नमालाह्व कृति प्रीत सज्जन मानसः ॥ 30 ॥

द्वादशाख्यान गाथाकृन्त्यासगाथा विधायकः।
अर्थपञ्चक सङ्ग्राहि गाथाकृति विचक्षणः ॥ 31 ॥

वैष्णवावश्यक दिनचर्या क्रम विधायकः।
श्रीहस्तिगिरि माहात्म्य कृत् कृताष्ट भुजाष्टकः ॥ 32 ॥

यथोक्तकारि स्तुतिकृत् कृतकामासिकाष्टकः।
प्रपत्ति दीपिका प्रीत श्रीमदीपप्रकाशकः ॥ 33 ॥

प्रपन्नान्वह संभाव्य परमार्थ स्तुतिप्रियः।
सुदर्शनाष्टकोद्धूत श्रेयोबाधक सञ्चयः ॥ 34 ॥

सज्जनद्ध्याशासनार्थ षोडशायुध संस्तुतिः।
श्रीमद्वेङ्कट नाथीय मङ्गळाशासनप्रियः ॥ 35 ॥

दयाशतक वीणागीतिप्रीत श्रीनिवासकः।
अयोध्यात्युत्तर दिशा दिव्यदेश गतिप्रियः ॥ 36 ॥

काञ्ची मायि यतिक्षुद्र निरासि स्तम्भलेखनः।
विद्यारण्य चमत्कार दायि वैराग्य पञ्चकः ॥ 37 ॥

कृत सेश्वरमीमांसो मीमांसा पादुकाकृतिः।
भट्टादि सूत्र दुर्व्याख्या निराकरण दक्षिणः ॥ 38 ॥

परिसङ्ख्याख्य विध्यर्थ निरूपण धुरन्धरः।
श्रीरङ्गनाथ सेनेश शासनोत्तंसन प्रियः ॥ 39 ॥

भट्टारकाद्युक्तीति रङ्गि सेवाक्रमोत्सुकः।
भगवद्भ्यानसोपान वर्तित श्रीशभक्तिकः ॥ 40 ॥

शतदूषण्यपक्रान्त मायि दुर्वादि गर्वकः।
निर्विशेष ब्रह्मशब्द मुख्यामुख्यार्थ भङ्गकृत् ॥ 41 ॥

निर्विशेष ब्रह्म जिज्ञास्यत्व भञ्जन दक्षिणः।
कर्मब्रह्म विचारात्म मीमांसैक्य विधायकः ॥ 42 ॥

विधानानर्ह वाक्यार्थ ज्ञानहेतुत्व भञ्जकः।
उपासना हेतुवेत्ता बाधानुसृति बाधकः ॥ 43 ॥

यज्ञादि ब्रह्म विविदिषा हेतुत्वनिरोधकः।
शाब्दापरोक्षहा धूत पूर्ववृत्त चतुष्टयः ॥ 44 ॥

मायि वादाधिकारघ्नो निर्विशेषात्म भावहा।
निर्विशेष परालम्बि निर्विकल्पक भञ्जनः ॥ 45 ॥

सन्मात्रात्यक्षरोत्था भेद दोषोद्धार कोविदः।
परवेदाप्रमाणत्व दृक् दृश्यत्वानुमानहा ॥ 46 ॥

व्यावर्तमान भावानुमान रोधन तत्परः।
मायिदृक् दृश्य सम्बन्ध निरासैक विचक्षणः ॥ 47 ॥

मायि बाह्य प्रकाशानुपपत्ति स्थापन क्षमः।
ब्रह्माश्रयाज्ञान हन्ता ब्रह्मावेद्यत्व भञ्जकः ॥ 48 ॥

ज्ञानाजन्म निराकृद्धी निर्विकारत्व मानहा।
धीनानात्व विरोधिघ्नो निर्विशेषानुमानहा ॥ 49 ॥

संविदात्मत्व हन्ताऽहमर्थात्मत्व निरूपकः।
ज्ञातृत्वाध्यास हन्ता च साक्षिभञ्जन तत्परः ॥ 50 ॥

शास्त्राध्यक्ष विरोधज्ञोऽनृतासाध्य ऋतार्थवित्।
जीवन्मुक्तत्वहा बाध सामानाधिकरण्यहा ॥ 51 ॥

संविदद्वैतहा माय्युपदेशानुपपत्तिवित्।
निर्विशेष तिरोधान हन्तात्माद्वैतभञ्जकः ॥ 52 ॥

जीवेश्वरैक्य वादघ्नोऽखण्ड वाक्यार्थ बाधकः।
भावरूपाज्ञान रोद्धा जीवाज्ञान विनाशकः ॥ 53 ॥

अविद्यानुपपत्तिज्ञो मायाविद्या विभागहा।
कुदृगुन्नीत संसार निवर्तक निवर्तकः ॥ 54 ॥

निवृत्त्यनुपपत्तिज्ञोः शब्दावेद्यत्व भञ्जकः।
निष्प्रपञ्च नियोगघ्नो विकल्पामानदा प्रियः ॥ 55 ॥

उपबृह्मण वैघट्य युक्तदुर्मत वेदिता।
ऐक्योपदेशान्यथोपपत्त्यसम्भव बाधकः ॥ 56 ॥

कुदृक् शास्त्राधिकारघ्नो मुक्ततद्वेद्य तत्त्ववित्।
सगुणागुण वेदान्त व्यवस्था करण क्षमः ॥ 57 ॥

ब्रह्मोपादानविन्मायोपादानत्व निरासकः।
कार्याद्यनुपपन्नत्व परिहार विचक्षणः ॥ 58 ॥

ब्रह्मानन्दत्व मतिनिर्विशेषानन्दभञ्जकः।
निर्विशेष ब्रह्मनित्य भाव भञ्जन दक्षिणः ॥ 59 ॥

अद्वितीय श्रुतिव्रात विसंवाद विचारकः।
सत्त्वासत्त्व विवेक्ता जीवैक्य भङ्ग विचक्षणः ॥ 60 ॥

कुदृक्पक्षापशूद्राधिकरण व्याहति प्रियः।
अधिकारि विवेकज्ञो यतिलक्ष्म विवेचकः ॥ 61 ॥

अलेपक मतच्छेत्ता मायि सूत्रार्थ बाधकः।
दशावतार स्तोत्राख्य जगन्मङ्गल कारकः ॥ 62 ॥

स्वप्नभाष्य कृताज्ञप्त वेदचूडा प्रवर्तनः।
यतीन्द्र सप्तत्याख्योपचार श्रुत्यन्त दीपकृत् ॥ 63 ॥

भक्तिप्रकर्ष विहित श्री भू गोदास्तुति प्रियः।
रङ्गेशाज्ञा कृतन्यासतिलकस्तोत्र रत्नकः ॥ 64 ॥

श्रीरङ्गनाथ दत्त श्रीवेदान्ताचार्य नामकः।
रङ्गेश्वरी दत्त सर्व तन्त्र स्वातन्त्र्य भूषितः ॥ 65 ॥

अयत्नकृत वादित्रय खण्डन निबन्धनः।
तत्त्वटीका व्याकृत श्रीमद्भाष्यामृत सागरः ॥ 66 ॥

वाजिशिखा शिखा व्याख्या कृति संप्रीत मानसः।
तात्पर्यचन्द्रिका सुस्थ गीताभाष्य महापथः ॥ 67 ॥

यामुनार्योक्त गीतार्थ सङ्ग्रह त्राणकारकः।
पिष्टपश्वादि गाथोक्ति व्यवस्था करणक्षमः ॥ 68 ॥

प्रध्वंस प्रागभावादि व्यवस्था करणक्षमः।
वैधहिंसाऽहिंसता स्थापन नीतिसुनीतिकः ॥ 69 ॥

मुमुक्षुसूक्त वागादि फलोक्तितति नीतिवित्।
अवाप्त सर्वकामत्व गुणनिर्णय कोविदः ॥ 70 ॥

कैवल्याख्य पुमर्थ स्वरूपानित्यत्व साधकः।
साङ्ग कर्म ज्ञान भक्ति योगावधृति कोविदः ॥ 71 ॥

विभूति विश्वरूपादि विरोध शमनक्षमः।
आत्मानात्म गुणक्षेत्र तज्ज्ञ शोधन दक्षिणः ॥ 72 ॥

पुरुषोत्तम देवासुर विभाग निरुक्तिवित्।
कर्तृ कर्मादि सत्त्वादि गुणाधीन विभागवित् ॥ 73 ॥

एकायनोक्तासूयाविर्भाव व्याकृति दक्षिणः।
उच्चिष्टातन हेत्वार्य भेदनिर्णय कोविदः ॥ 74 ॥

स्त्रीशूद्र भगवत्पूजा तान्त्रिकत्वाभिधायकः।
स्वपराधीनतायत्त शास्त्र वैयर्थ्य बाधकः ॥ 75 ॥

तत्त्वमुक्ताकलापस्रक् कृतसर्वार्थ सिद्धिकः।
कृताधिकरण सारावल्याख्य ग्रन्थशिखामणिः ॥ 76 ॥

सारावली व्याक्रियादि करणादर्श कारकः।
श्रीमन्त्रायपरीशुद्धि विशुद्धीकृत मानसः ॥ 77 ॥

न्यायसिद्धाञ्जनोदञ्चन्मेय याथात्म्य बोधनः।
आक्षपादीय सूत्रार्थ शिक्षाकरण दीक्षितः ॥ 78 ॥

अक्षपाद चमत्कार दायि सूत्र समूहकृत्।
व्यासाक्षपाद सूत्रार्थ विरोध परिहारवित् ॥ 79 ॥

द्रव्याद्रव्य भिदा तत्तल्लक्षणोक्ति विचक्षणः।
त्रैकाल्यानेकसिद्धान्त निरासा सम्भवान्तकः ॥ 80 ॥

रूपादि पञ्चकाधारा भाव वाद निरासकः।
धर्मधर्मित्वापलाप वादध्वान्त दिवाकरः ॥ 81 ॥

पृथिव्यादि चतुर्द्रव्य मात्र पक्ष विभेदिता।
त्रिगुणेन्द्रिय वर्गानध्यक्ष भाव विधायकः ॥ 82 ॥

प्रकृत्यागम गम्यत्व जगन्मूलत्व बोधकः।
चतुर्विंशति संख्याक तत्त्वसृष्टि प्रकारवित् ॥ 83 ॥

साङ्ख्यादि हैतुकोन्नीत सृष्टि तद्धेतु बाधकः।
अष्टीकरण पञ्चीकृति त्रिवृत्कृति भेदवित् ॥ 84 ॥

अन्त्यावयविहाऽन्यूनानुत्कृष्ट परिमाणवित्।
शरीरोत्पत्त्युपादानैक भूतोक्ति निरासकः ॥ 85 ॥

साङ्ख्य सत्कार्य वादघ्नः क्षणिकत्व मतान्तकः।
क्षणोपाधि विशेषज्ञो हेतु साध्यापलापहा ॥ 86 ॥

प्रतिसङ्ख्याप्रतीसङ्ख्या निरोध मतभञ्जकः।
अक्षभूत विकारत्व साधक प्राणनाशनः ॥ 87 ॥

भूतेन्द्रियाप्यायकत्व निर्धारण विचक्षणः।
अन्तःकरण नानात्व बाह्याक्षैक्य निरासकः ॥ 88 ॥

मनोव्यापित्व नित्यत्व हेन्द्रियाणुत्व वेदिता।
चक्षुरादि प्राप्यकारि भावसाधन दक्षिणः ॥ 89 ॥

शब्ददेश गतश्रोत्र कार्यकृत्वाभिधायकः।
स्वदेशागत वृत्तित्व निग्राहि श्रोत्रबाधकः ॥ 90 ॥

व्योमाध्यक्षत्व निर्णेता खावकाशोपकारवित्।
आकाशावरणाभाव मात्रभाव विभञ्जकः ॥ 91 ॥

आकाश नित्यत्व विभुभाव वाद विनाशकः।
दिग्वस्तु साधकच्छेदी दिग्व्योमाभेद साधकः ॥ 92 ॥

राजसाख्य महत्तत्त्वाभिन्न प्राण विभञ्जनः।
प्राणाक्षत्वा वायुभाव वादनिहव दक्षिणः ॥ 93 ॥

वैश्वानर स्वरूपादि निरूपण विचक्षणः।
तेजो धर्म प्रभातेजो भावसाधन तत्परः ॥ 94 ॥

प्रभा दीपाद्यवयव भावाभाव विधायकः।
प्रभाविषय भाष्योक्ति विरोधि शमनक्षमः ॥ 95 ॥

स्थिरास्थिराख्य तेजो विभागज्ञान विचक्षणः।
तम आलोक विरहत्वाभाव पृथिवीत्ववित् ॥ 96 ॥

पृथ्वीपतन पृथ्वीभ्रमण वाद विनाशकः।
कालस्वरूप केशान्य भावज्ञान धुरन्धरः ॥ 97 ॥

कालानुत्पत्त्यक्षगम्य भावस्थापन तत्परः।
कालसर्व व्यापकत्व सर्वसाधकताप्रियः ॥ 98 ॥

आत्माङ्ग मानसाक्षज्ञानादिभेद प्रसाधकः।
आत्मप्रत्यक्त्व कर्तृत्व स्वप्रकाशत्व साधकः ॥ 99 ॥

यत्नवैफल्य हर्तौपाधिक जीवेश भेदहा।
स्वाभाविकेश जीवात्म भेदाभेद मतान्तकृत् ॥ 100 ॥

एकतन्वेक जीवात्म मात्रपक्ष विदारणः।
ब्रह्म प्रतिच्छन्द जीववादभञ्जन दक्षिणः ॥ 101 ॥

चतुर्विधात्मानित्यत्व वादप्राण विनाशनः।
जीवात्मानित्यत्व विभुवादभञ्जन तत्परः ॥ 102 ॥

जीवैककाल नैकाङ्गाधिष्ठातृत्वाभिधायकः।
जीव व्यापित्वोपपत्तिहा जीवाणुत्व साधकः ॥ 103 ॥

देहतुल्य परीमाण जीववाद विनाशकः।
नित्यसंसारि सदसत्भावस्थापन तत्परः ॥ 104 ॥

मोक्षोपाय सुदुर्ज्ञान भाववाद विभञ्जनः।
अपवर्गार्थि सद्धेतु विद्या नानाविभागवित् ॥ 105 ॥

क्रिया विद्योपकारित्व प्रकारज्ञान कोविदः।
क्रियाविद्या कर्तृ संस्कारत्व वाद विनाशकः ॥ 106 ॥

सर्वाश्रमिब्रह्मविद्याधिक्रिया स्थापन क्षमः।
कर्मविद्याश्रमाङ्गत्व नित्यत्वादि विभागवित् ॥ 107 ॥

प्रवृत्त्याख्य निवृत्त्याख्य कर्मभेद स्वरूपवित्।
त्रैवर्णिकाधिकरण सर्वाधिकार भेददृक् ॥ 108 ॥

तत्त्वमस्यादि भुवन बाधकत्व विनाशकः।
जगन्निवर्तक ज्ञान निवर्तक निवारकः ॥ 109 ॥

जगन्निवर्तक ज्ञान वेद्याभाव विधायकः।
जगन्निवर्तक ज्ञानाधाराभाव विधायकः ॥ 110 ॥

ब्रह्मविद्या पापनाश कारणत्वोपपत्तिवित्।
विद्यानाश्य त्रिवर्गादि सुकृतोक्ति विचारकः ॥ 111 ॥

अश्लेषोत्तर काम्यार्थ पुण्यसम्भव वेदिता।
विरजोत्तर तीरान्त त्यक्त दुर्वासनोक्तिमान् ॥ 112 ॥

मुक्तबुद्धि विकासोत्तर सीमाभाव साधकः।
मुक्ताद्यैच्छिक देहादि योगवर्णन तत्परः ॥ 113 ॥

मुक्ताधीच्छा विघाताभाव स्थापन विचक्षणः।
निर्दुःख मुक्तानुभव वेदी नित्याख्य सूरिवित् ॥ 114 ॥

देवतान्तर तादात्म्य मुक्तिवाद तमोनुदः।
मतान्तरस्थ सायुज्य शब्दार्थानुपपत्तिवित् ॥ 115 ॥

मुक्तात्म पुनरावृत्ति प्रसङ्ग परिहारकः।
वैशेषिकादि पाषाण तुल्य मोक्षोक्ति वारकः ॥ 116 ॥

सांख्याभिमत संसार मोक्षपक्ष निवारकः।
मतान्तरस्थाभिमत मोक्षवैविध्य वारकः ॥ 117 ॥

ईशवेदैक गम्यत्व वेदाबाध्यत्व साधकः।
उपदेशानुमानेशानुमान दमन क्षमः ॥ 118 ॥

शास्त्रयोनित्व साङ्ख्यादि कृतिद्वय विरोधहा।
निमित्ततोपादानत्व द्वयैकाधार वेदिता ॥ 119 ॥

सूक्ष्म जीवाचिद्विशिष्टे शोभादानत्व साधकः।
मतान्तरस्थ ब्रह्मोपादानत्वोक्ति निवारकः ॥ 120 ॥

जीवाचिदीश विकृतिमत् ब्रह्मोक्त्यपनोदनः।
सर्वानुवृत्त सन्मात्र ब्रह्मत्वोक्ति विभञ्जकः ॥ 121 ॥

जीवादि परिणामीश जैनगन्धि मतान्तकृत्।
ब्रह्मोपादिक जीवत्व भास्करोक्त्यपहासकः ॥ 122 ॥

अविद्यासहित ब्रह्म विवर्तोक्त्युपरोधकः।
मतान्तरस्थाविद्यावलोकनानुपपत्ति दृक् ॥ 123 ॥

ब्रह्मज्ञानानुमाश्रौत पादोदाहरण क्षमः।

मायादिपद सद्ब्रह्म दोषज्ञापगतापहः ॥ 124 ॥

अविद्या साधकाज्ञान कार्यमिथ्यात्व साधकः।

कार्योपादान सादृश्य नियमोक्ति विभञ्जकः ॥ 125 ॥

जगन्मिथ्यात्वानुमान बहुव्याहति बोधकः।

अनित्य मिथ्याभाव प्रकृप्ति भङ्ग विधायकः ॥ 126 ॥

भेदाध्यक्षा विरुद्धार्थनिषेध श्रुति बोधकः।

परोक्षबाध्यता योग्या योग्य प्रत्यक्षवेदिता ॥ 127 ॥

मायि शास्त्राध्यक्षमूल दोष साम्योपपादकः।

तुल्यदोष प्रमाणान्योन्य संबाध गतापहः ॥ 128 ॥

शास्त्रैक वेद्यानध्यक्ष नानाभेदोपपादकः।

मायि बौद्धादि साम्यापादन निर्वहण क्षमः ॥ 129 ॥

मायि पक्षानेक बाधक विकल्पाभिधायकः।

पर शास्त्रानुपपत्ति परिहार विचक्षणः ॥ 130 ॥

ईश देहादि पञ्चापाकृतिवाद निरासकः।

देहादि विग्रहाभाव वादव्रात निरासकः ॥ 131 ॥

व्यूहादि पञ्चरूपेश पूर्णषाड्गुण्य वेदिता।

ईशव्यूह विशेषाभिमानित्व परिहारकः ॥ 132 ॥

ईशात्माचार्य शिष्यत्वाभिनीति फल सारवित्।

ईश चित्रानेक वृत्तान्त विशेषादि तत्त्ववित् ॥ 133 ॥

ईश सर्वज्ञ भावानुपपत्ति विनिवारकः।

सर्वेश सर्वशक्तित्व स्वेच्छावत्वाभिधायकः ॥ 134 ॥

धीस्वभास्यत्व नित्यत्व द्रव्यत्व स्थापन क्षमः।
बुद्ध्यवेद्यत्व नित्यानुमेयत्व मतभञ्जकः ॥ 135 ॥

प्रमाविपर्ययत्वापरतर्कोह स्वरूपवित्।
प्रमाण लक्षणज्ञस्सत् ख्यात्यर्थ ख्यातिबाधकः ॥ 136 ॥

अन्यथाख्याति सन्त्याग स्वीकार द्वय साधकः।
सन्देह याथार्थ्यवेत्ताऽनिर्वाच्यख्याति भङ्गकृत् ॥ 137 ॥

अनिर्वच स्वरूपादि रजतोत्पत्ति भञ्जकः।
बुद्धोक्त निरधिष्ठान ख्यातिवाद निरासकः ॥ 138 ॥

अनौपाधिक तुच्छख्यातिवाद प्राण नाशकः।
योगाचार प्रहर्ता च ह्यख्यात्यनुपपत्तिहा ॥ 139 ॥

आत्माकार ज्ञानहर्ता ह्यात्मख्यात्यपहारकः।
निरालम्बन विज्ञानानुमाभञ्जन दक्षिणः ॥ 140 ॥

बाह्यानौपाधिका सत्ख्याति साधन विभञ्जनः।
धीगतार्थोद्भवार्थाकार वाद परिहारकः ॥ 141 ॥

हरिद्रा चूर्ण नीत्यर्थ धीयोगोत्थाकृति द्विषत्।
सौगतोक्तानधिष्ठान ख्यातिवाद निरोधकः ॥ 142 ॥

अनालम्ब ख्यातिहन्ता स्मृतिज्ञान स्वरूपवित्।
प्रत्यक्ष लक्षणज्ञाता दिव्यार्षाध्यक्ष साधकः ॥ 143 ॥

वैशिष्ट्या गोचरज्ञान मतच्छेदन दीक्षितः।
सञ्ज्ञानुविद्ध सर्वार्थ बुद्धिशब्दात्यबाधहा ॥ 144 ॥

योगि प्रत्यक्षानुमान दूषणोद्भावनक्षमः।
मानसाध्यक्ष भङ्गज्ञस्सन्निकर्ष स्वरूपवित् ॥ 145 ॥

अलौकिकाख्य सम्बन्ध प्रत्यक्ष मत बाधकः।

अनुमानाद्यक्षमान बहिर्भाव विधायकः ॥ 146 ॥

अनुमा मानता लक्ष्मज्ञोऽनुमापादि तर्कहा।

अनुमानत्वापरोत्तर प्रकारविदग्रणीः ॥ 147 ॥

उपाधि लक्षणोपाधिविधूनन विशेषवित्।

व्याप्ति स्वरूप व्याप्तिग्राहक मान विचारकः ॥ 148 ॥

व्याप्ति ग्रह प्रकारज्ञाता व्याप्त्यादि विभागवित्।

केवलान्वय्यनूमान विशेषज्ञान साधकः ॥ 149 ॥

महाविद्या निरासोत्थ विरोध परिहारकः।

केवल व्यतिरेक्याख्यानुमाभञ्जन दक्षिणः ॥ 150 ॥

लक्षणज्ञोऽन्यवाद्युक्त लक्षणार्थ द्वयापहा।

स्वपरार्थानुमाप्राज्ञो न्यायावयव वेदिता ॥ 151 ॥

निग्रहस्थान हेत्वाभास जातिच्छल वेदिता।

वादजल्प वितण्डाज्ञो मानाभास विवेचकः ॥ 152 ॥

अनुमानाध्यक्षबाह्य शब्दमान प्रसाधकः।

आकाङ्क्षा योग्यता शक्ति वाक्यार्थ सहकारिवित् ॥ 153 ॥

पदवाक्य स्वरूपज्ञोऽन्विताभिवदनोत्सुकः।

अभीहितान्वय ज्ञाता विशिष्ट पद शक्तिवित् ॥ 154 ॥

विभक्त्याख्यात धातूपसर्ग तद्धित वेद्यवित्।

समासान्वय कृन्मुख्य प्रत्ययार्थ विशेषवित् ॥ 155 ॥

शाब्दबोधाकार वेत्ता लक्षणापद वृत्तिवित्।

विशेष्य मुख्य वृत्तापृथक्सिद्ध पदशक्तिवित् ॥ 156 ॥

भगवत् सर्व शब्दाभिधेयत्व स्थापन क्षमः।
तत्त्वमस्यादि वाक्यार्थ निरूपण विचक्षणः ॥ 157 ॥

शब्दोक्त शब्द सामानाधिकरण्यार्थ वेदिता।
भ्रमोत्पत्ति प्रमाज्ञप्ति स्वतस्थोद्भावन क्षमः ॥ 158 ॥

वेद प्रवाह नित्यत्व वेदेशाजनि तत्त्ववित्।
विध्यर्थ वाद मन्त्रादि तदर्थावधृति क्षमः ॥ 159 ॥

भाषामन्त्र व्यवस्थाविन्मन्त्रावान्तर भेदवित्।
अद्रव्यमानवित् सत्त्वासत्त्व शब्दोक्ति बाधकः ॥ 160 ॥

जननादि मृषात्वोक्ति मतच्छेदन तत्परः।
द्रव्याद्रव्यानुमेयाद्यक्षभेदाभेदवारकः ॥ 161 ॥

भेदबाधक निस्ताराद्रव्येयत्तावतारकः।
रजस्तमस्सत्त्वगुणोपयोगाद्रव्यतोक्तिमान् ॥ 162 ॥

सत्त्वाद्यवस्थावैचित्र्यानन्त्य निर्णय कोविदः।
शब्दादि ग्राहकाधार नियमोक्ति विचक्षणः ॥ 163 ॥

शब्दादि गुणयुङ्गित्य विभूति व्याकृति क्षमः।
सर्व भूताश्रितध्वाना द्रव्यत्व स्थापन क्षमः ॥ 164 ॥

सौगतोक्त ध्वानजैन शब्द पुत्कल वादहा।
वर्ण वेदानित्य नित्यत्व प्रकारावतारकः ॥ 165 ॥

अनुष्णाशीत शीतोष्ण स्पर्शाधार विशेषवित्।
भूतपञ्चक वर्णोक्ति निर्वोढा रूपभेदवित् ॥ 166 ॥

चित्ररूप मतच्छित्स्नेह गुणान्तर बाधकः।
निराकृत गुरुत्व द्रवत्वाख्यान्य गुणद्वयः ॥ 167 ॥

गुरुत्वागम निर्वोढा गुरुत्वाध्यक्ष लिङ्गनुत्।
एकत्व द्वित्व सङ्ख्यादि गुणान्तर निरासकः ॥ 168 ॥

परिमाण पृथक्त्वाख्य गुणान्तर निरासकः।
नित्यानित्याख्य संयोग स्थापनैक विचक्षणः ॥ 169 ॥

परापर विभक्तत्व गुणत्रय निरासकः।
विषयालम्बिताभेद धीवैषम्यावतारकः ॥ 170 ॥

मुक्तबुद्धि जगद्व्याप्ततोपपत्ति निरूपकः।
योगिबुद्धि विनष्टैष्यत् गोचरत्वोपपादकः ॥ 171 ॥

अद्रव्य नित्यधी पक्ष विषयित्वादि बाधकः।
धीविकार द्वेषराग सुखदुःख प्रयत्नदृक् ॥ 172 ॥

त्यक्त जीवन योन्याख्य यत्नप्राकट्यदर्शनः।
भगवत् प्रीतिकोपान्य धर्माधर्म मतान्तकः ॥ 173 ॥

श्येनाग्नीषोम वैषम्य साधनैक विचक्षणः।
मन्त्रस्वार्थ परत्वोक्ति विरोध परिहारवित् ॥ 174 ॥

देवतामुख संसिद्ध भगवत्प्रीति साधकः।
संस्कार कर्म भगवत्प्रीत्यर्थत्व प्रसाधकः ॥ 175 ॥

अपूर्वविधिवाच्यत्व प्राधान्य बहुदोषवित्।
वक्त्रभिप्राय देवप्रसाद लिङ्गाच्यता सुधीः ॥ 176 ॥

संस्काराख्य गुणच्छेत्ता कर्माख्यार्थ स्वरूपवित्।
संस्थानोत्तीर्ण गोत्वादि सामान्यमत भञ्जकः ॥ 177 ॥

जातिवादानेकवादि समीरीत निरासकः।
सादृश्यादि पदार्थान्तर क्लृप्ति प्राणनाशनः ॥ 178 ॥

अनेक शून्यावयवानुवृत्ति व्यवहारवित्।
विशेष समवायाख्य पदार्थान्तर बाधकः ॥ 179 ॥

अभाव भावरूपत्व स्वभावेयत्व बोधकः।
रामानुजीय सिद्धान्त सर्वोत्कृष्टत्व साधकः ॥ 180 ॥

सच्चरित्र त्राण सम्यक् त्रात सन्मार्ग सन्ततिः।
खिलाध्यक्ष श्रुति स्थापित चक्राङ्गन संस्कृतिः ॥ 181 ॥

स्मृतीतिहास निर्णीत तप्त चक्रादि धारणः।
तप्तमुद्रा निषेधादि वचोनिर्वाह कोविदः ॥ 182 ॥

प्रत्यक्षश्रुति रूप प्रमाणबोध्योर्ध्व पुण्ड्रकः।
ऊर्ध्व पुण्ड्र प्रमाण स्मृतीतिहास पुराणवित् ॥ 183 ॥

ऊर्ध्वपुण्ड्राननुष्ठान निमित्तानर्थ साधकः।
सर्ववैदिक कर्माङ्गोर्ध्वपुण्ड्र धृतिकोविदः ॥ 184 ॥

भस्म श्रीवैष्णवास्पृश्य भावसाधन दक्षिणः।
ऊर्ध्वपुण्ड्र धृतिद्रव्य विशेषावधृतिक्षमः ॥ 185 ॥

अच्छिद्र पुण्ड्रदमनस्तिर्यक्पुण्ड्र निषेधकः।
भगवत्पाद सदृशोर्ध्वपुण्ड्राकृति वेदिता ॥ 186 ॥

पुण्ड्र सच्चित्रता वेत्ता पुण्ड्रसङ्ख्या विचारकः।
ऊर्ध्वपुण्ड्र धृति प्रोक्त प्रकार विवृतिक्षमः ॥ 187 ॥

ऊर्ध्वपुण्ड्रानेक मन्त्र व्यवस्थाकरण प्रियः।
वर्णाश्रमादि नियतोर्ध्व पुण्ड्राङ्गुलि वेदिता ॥ 188 ॥

ऊर्ध्वपुण्ड्र स्थानवेत्तोर्ध्वपुण्ड्र ध्येय देववित्।
श्रुतिस्मृत्यादि निर्णीत विष्णु नैवेद्यभोजनः ॥ 189 ॥

विष्ण्वर्तान्नाभक्त चक्षुर्दर्शनोत्सारणप्रियः।

भगवद्भुक्त शेषान्नाभक्त दान निषेधकः ॥ 190 ॥

अन्यदेव निवेद्यादि भोज्यत्वाभाव साधकः।

अनन्तायुध पक्षीश नैवेद्याद्यत्व साधकः ॥ 191 ॥

सेनेश द्वारपालादि नैवेद्याद्यत्व बाधकः।

सेनेश हविरालम्बि पक्षभेद निरूपकः ॥ 192 ॥

विभक्त विष्णुनैवेद्य चातुर्विद्योपयोगवित्।

हरिपूजोपयुक्तस्थायि पूजान्तर योगवित् ॥ 193 ॥

विष्णु नैवेद्यैक साध्य वैश्वदेव विधिप्रियः।

विष्णु नैवेद्यैक साध्य पितृश्राद्ध क्रियाधिकः ॥ 194 ॥

विष्णु नैवेद्यैक साध्य प्राणाग्नि हवनक्रियः।

वैश्वदेवेज्योपयुक्त भोज्यता वाक्य शोधकः ॥ 195 ॥

विष्णु नैवेद्य हार्दानिवेद्याशन निषेधकः।

अर्चाहार्दादि रूपाश्च हविरंश विशेषवित् ॥ 196 ॥

अन्यप्रयुक्तोपजीवि प्राणाग्नि हवनक्रियः।

शठकोपादि नैवेद्य सार्थप्राणाग्निहोत्रकः ॥ 197 ॥

न्यासविंशति संक्षिप्त निक्षेपापेक्षिताखिलः।

संक्षिप्त न्यासविद्याङ्ग श्रीन्यासदशकप्रदः ॥ 198 ॥

निक्षेपरक्षाकृत्यास निषेध नवकान्तकः।

आनुकूल्याद्यङ्गभेद प्रपत्यध्याय भेददृक् ॥ 199 ॥

अन्यदेव पराचार्य त्यागपर्यन्त बोधकृत्।

संहिताभेद गम्य न्यासविद्यामनुभेदवित् ॥ 200 ॥

न्यास भक्तापचारादि नाश्यत्व व्याकृतिक्षमः।
न्यासमन्त्र द्वयन्यास सर्वाधिकृति शोधकः ॥ 201 ॥

पुंसु विद्या न्यासविद्या शेषभाव प्रकारवित्।
सङ्कल्पित गुरूपाया सङ्ग्राह्य लघुवेदिता ॥ 202 ॥

श्रीराम चरमश्लोक व्याख्यान करणक्षमः।
श्रुत्यन्त वेदन ग्राह्य भक्ति न्यासोपपादकः ॥ 203 ॥

ब्रह्मसूक्ताद्युक्त भक्ति न्यासविद्या द्वयोत्सुकः।
मोक्षार्थाराधनाद्यर्थ न्यासावान्तर भेदवित् ॥ 204 ॥

भाष्यकारोक्त गद्यत्रय व्याख्यान विचक्षणः।
गद्यद्वय व्याकृतित्व निरूपण विचक्षणः ॥ 205 ॥

गद्य प्रपत्ति प्राधान्य परत्व प्रतिपादकः।
प्रपित्सु पूर्वमध्येष्यत्कालकर्तव्य बोधकः ॥ 206 ॥

शरण्य पूर्वमध्येष्यत्कालकर्तव्य वेदिता।
लक्ष्मीप्रपत्ति मोक्षार्थ प्रपत्यर्थत्व साधकः ॥ 207 ॥

कमलानुग्रहैकान्त्य पारम्य त्राणदीक्षितः।
श्रीन्यास पारमैकान्त्य भञ्जकत्व निवारकः ॥ 208 ॥

परभक्ति परज्ञान परमप्रेम शोधकः।
न्यास स्वरूप विषयायत्त वैषम्य साधकः ॥ 209 ॥

पञ्चायुधावान्तरीय प्रयोजन विचारकः।
पञ्चायुध प्रमाणीय विरोधोत्तार कोविदः ॥ 210 ॥

गद्योक्त पितृमात्रादि त्यागनिर्वाह कोविदः।
अकृत्य कृत्याकरणापचारादि विशेषवित् ॥ 211 ॥

भक्तापचारवित् पापशक्तिभेद निरूपकः।
रहस्य स्पष्ट भक्तापचारादि परिहारवित् ॥ 212 ॥

वर्तमान भविष्यत्काम्य क्षमार्थनयुक्तिवित्।
प्रपन्नबुद्धि पूर्वैनो निष्कृत्युक्त्यविरोधवित् ॥ 213 ॥

चतुःश्लोकी भाष्यसूक्त लक्ष्मीशत्वोपपत्तिकः।
लक्ष्मीविषय दुर्वादि विरुद्धोक्ति निवारकः ॥ 214 ॥

स्तोत्रभाष्य कृति व्यक्त यामुनाचार्य मानसः।
स्वार्थान्योक्त स्तोत्र सर्व पुरुषार्थत्व साधकः ॥ 215 ॥

गुरु तद्गुरु सम्बाध कालप्राचार्यदास्यकृत्।
वैखानसागमाद्युक्त नतिभेद विचारकः ॥ 216 ॥

वकुळाभरणाचार्य भावानेकविरोधहा।
अध्यक्षागम सत्सूक्ति निर्णीत जगदीश्वरः ॥ 217 ॥

नारायणाद्यनन्यार्थ सञ्ज्ञास्तेतर दैवतः।
पारम्य सूचकानेकानन्यथासिद्ध लिङ्गदृक् ॥ 218 ॥

वक्तृसत्त्वाद्यनुगुण सात्त्विकादि पुराणवित्।
सात्त्विकादि प्रवचन सात्त्विकत्व प्रसाधकः ॥ 219 ॥

श्रीपाञ्चरात्र रक्षाकृत् पञ्चरात्र प्रमाणवित्।
अस्मार्त संस्क्रियाधीना ब्राह्मण्यापत्ति वारकः ॥ 220 ॥

त्रैय्यागमोक्त कर्माधिकारि वैषम्यसाधकः।
एकायनापौरुषेय भावसाधन वेदिता ॥ 221 ॥

श्रीपाञ्चरात्र सिद्धान्त भेदलक्षण वेदिता।
चतुर्विधागम ब्रह्म प्राप्तिहेतुत्व साधकः ॥ 222 ॥

सिद्धान्त संहितातत्तत्साङ्कर्य परिहारवित्।
स्वान्य सिद्धान्त कर्माधिकाराभाव प्रसाधकः ॥ 223 ॥

आगमावान्तरोत्कर्षापकर्षादि विधायकः।
उत्कृष्टस्थ निकृष्टोक्त क्रियाधिकृति बोधकः ॥ 224 ॥

वैखानसाख्य तन्त्र प्रमाणत्व विवृतिक्षमः।
वैखानसागमान्योन्य साङ्कर्यासक्तिभञ्जकः ॥ 225 ॥

श्रीपाञ्चरात्र सर्वोपजीव्यत्वोक्ति विचक्षणः।
सूत्रान्तर स्थापितार्चा तन्त्र पूजा विधायकः ॥ 226 ॥

शैवागमाद्यमान्यत्व संस्थापन विचक्षणः।
प्राक् प्रवृत्त परित्यागोत्कृष्टागम निरोधवित् ॥ 227 ॥

सात्त्विकादिविभागाधीनागमामानदापहः।
पूर्वागमोत्कृष्ट मार्ग विधान सुगतिप्रदः ॥ 228 ॥

स्वयं व्यक्तादि भवन तारतम्य विधायकः।
देवपूजा मुख्य गौणाधिकारि व्याकृतिक्षमः ॥ 229 ॥

देवेज्याष्टाङ्गतोत्कर्ष वर्णनैक विचक्षणः।
प्रयत्नाद्यनपेक्ष स्वतस्सिद्धोत्कर्ष वस्तुदृक् ॥ 230 ॥

परमैकान्ति कर्तव्य पञ्चकाल क्रियासुधीः।
भाष्यकाराश्रयीभूत पञ्चकाल प्रकाशकः ॥ 231 ॥

वैशेषिक त्रिकालार्चाभिधानाद्यविरोधदृक्।
श्रीपाञ्चरात्र स्मृत्यैककण्ठ्य स्थापनदक्षिणः ॥ 232 ॥

व्यास दक्षाद्युक्तधर्म शास्त्रार्थ विवृतिक्षमः।
सर्वक्रियाद्यङ्गभूत हरिस्मरण बोधकः ॥ 233 ॥

पाञ्चरात्रोक्त भगवद्ज्ञान नित्यत्व साधकः।
अर्चावतार रहित गृहभोजन दोषवित् ॥ 234 ॥

भगवद्भ्यान रहित कालवैयर्थ्य साधकः।
प्राप्त कामार्थ लिप्सा पारमैकान्त्यानुकूल्यदृक् ॥ 235 ॥

कैङ्कर्य कालावश्यानुसन्धेयार्थ विशेषवित्।
समयाचार नियमाध्यायोक्तावश्यकत्ववित् ॥ 236 ॥

वैष्णव श्री धर्मशास्त्रोदीरितावश्यकत्ववित्।
आरम्भ मन्त्रनिर्णेता सात्त्विकत्याग साधकः ॥ 237 ॥

रात्र्यन्तोत्थान समय हरिकीर्तन साधकः।
निद्रा निमित्ताचमनानुकल्पावश्यकत्ववित् ॥ 238 ॥

पूर्वक्षपा विरमित योग कार्यत्व वेदिता।
अभियानारम्भकाल वेत्ता निर्वेद कालवित् ॥ 239 ॥

निर्वेदफलवित् कार्यकर सात्त्विक धैर्यवित्।
मन्त्राधिकम कुर्वन्योपाय दूषण वेदिता ॥ 240 ॥

गुरुध्यानानुकर्तव्य हरिध्यान स्वरूपवित्।
कैङ्कर्यार्थाचार्य विष्णु ध्यानानुध्यान बोधकः ॥ 241 ॥

नित्यप्रयोज्य कैङ्कर्य पूरणार्थन मन्त्रवित्।
स्तोत्रादि स्थावश्य कीर्त्य देवदेव्यादि नामवित् ॥ 242 ॥

भगवन्मन्त्र तत्काल चोदितोचितजप्यवित्।
पदन्यास मनुज्ञाता पदक्रम मनूक्तिमान् ॥ 243 ॥

गतिकालावश्यकार्य केशवाह्वान कीर्तनः।
सन्ध्या स्नानोपकरण ग्रहणैक विचक्षणः ॥ 244 ॥

मलमूत्र विसर्गार्त्त देशादि सकलार्थवित्।
शौच सङ्ख्याक्रम द्रव्य कालवैषम्य साधकः ॥ 245 ॥

दन्तधावन काष्ठादि व्यवस्था न्यायतत्परः।
स्नानतीर्थ विशेषज्ञः स्नानभेद विधायकः ॥ 246 ॥

उष्णोदक स्नानकाल व्यवस्था करणक्षमः।
वासोधरण पुण्ड्राङ्ग तर्पणक्रम साधकः ॥ 247 ॥

सन्ध्योपास्तिविशेषज्ञो गायत्री स्थानसारवित्।
गायत्रीजप सङ्ख्यान साधनोत्कर्ष सारवित् ॥ 248 ॥

सन्ध्याकालीन नियम वेत्तोपस्थान कालवित्।
दिगादि नमनासक्त पारमैकान्त्य भङ्गहा ॥ 249 ॥

सन्ध्याकालावश्यकार्य मूलमन्त्र जपोक्तिमान्।
व्याकृताधार शक्त्यादि देवर्षि पितृतर्पणः ॥ 250 ॥

नित्यतर्पण कर्मान्तवासः पीडन साधकः।
ब्रह्मेज्याकालवित् ख्यात तीर्थ मन्त्रोपसंहतिः ॥ 251 ॥

तीर्थासन्नानन्त सद्म प्रवेशावश्यकत्व वित्।
भगवत्सद्म सन्त्याज्य द्वात्रिंशदपचारकः ॥ 252 ॥

अभ्युक्षणोक्षितगृहो होमकाल विशेषवित्।
परगोग्रास दानर्द्धिरभियान स्वरूपवित् ॥ 253 ॥

उपादानाख्य समय वेत्तोपादान मन्त्रवित्।
हेयोपादेय देवार्थ सुमादि द्रव्य वेदिता ॥ 254 ॥

स्वार्जितारण्य मूल्य क्रीत याचित गुणादिवित्।
सुमनोगत सत्त्वादि कृतोपादानहानघः ॥ 255 ॥

तिथिभेदादि नियत पुष्पभेदादि साधकः।
दिवानिशा देवयाग व्याप्त सून विशेषवित् ॥ 256 ॥

शास्त्रानुमत शिष्टाग्राह्य पुष्पादि निवारकः।
गृहालयार्चानियत वासः पुष्पादि भेदवित् ॥ 257 ॥

स्रङ्माला भेददृक् सूत्र ग्रथितादि निषेधकः।
भगवद्याग वज्र्योपादेयाभरण शोधकः ॥ 258 ॥

प्राण्यङ्ग सुरभिद्रव्योपयोग व्याकृतिक्षमः।
हेयोपादेय मुकुळ पत्राङ्कुर विचारकः ॥ 259 ॥

दिनद्वयापर्युषित कुसुमोक्ति विचक्षणः।
भोजराजाद्युक्तकाल पुष्पभेद विचारकः ॥ 260 ॥

ग्राह्यमूलग्रहीता धूप दीप द्रव्य वेदिता।
दशा विशेषानुमतार्जनोपाय विशेषवित् ॥ 261 ॥

सर्व प्रतिग्रह व्याप्त मनुनिर्णय कोविदः।
यति पुष्पग्रहोपाय विशदीकरणक्षमः ॥ 262 ॥

पूजाद्यर्हान्तरात्मीय गुणोपादान साधकः।
भाष्यकारोक्त नित्याख्य ग्रन्थ व्याकरणक्षमः ॥ 263 ॥

इज्याकाल विशेषज्ञ इज्याप्राधान्य साधकः।
परमैकान्ति शब्दार्थ तन्निबन्धन वेदिता ॥ 264 ॥

यत्यन्न देवपूजादि महादोष प्रसाधकः।
परमैकान्ति संदृष्टान्यदेव नतिबाधकः ॥ 265 ॥

कर्मण्यता भावहेतु पाप तच्छान्ति हेतुकृत्।
इज्याधिकार भेदज्ञ इज्यासारार्थ वेदिता ॥ 266 ॥

स्वाध्यायकाल स्वाध्याय भेदादि कृतिभेददृक्।
स्वाध्याय सार सन्द्रष्टा स्वाध्यायाङ्ग विशेषवित् ॥ 267 ॥

सायं सन्ध्या होम देव पूजा भोजनकालवित्।
भुजिलोप निमित्त प्राणाग्निहोत्र मनूजपः ॥ 268 ॥

प्रदोष वर्जित निशा योग्याधीति विशेषवित्।
त्रयोदशी पूर्वरात्रि कार्यमौन विशेषवित् ॥ 269 ॥

प्रदोषकाल कर्तव्य सन्ध्या सङ्कोच वेदिता।
प्रदोषावश्य वर्ज्याष्टाक्षर मन्त्र जपोक्तिमान् ॥ 270 ॥

सन्ध्या त्याज्याष्टाक्षरान्य गायत्र्यन्य जपक्रियः।
आशौचकाल सन्त्याज्य गायत्र्यन्य जपक्रियः ॥ 271 ॥

अध्यायानर्ह विषुवाद्यनुज्ञात जपान्तरः।
मौनक्रिया समायात सच्छिद्रत्व निरासकः ॥ 272 ॥

प्रदोष नरसिंहान्य हरिदर्शन बाधकः।
प्रदोष कालानुज्ञात स्वगृहार्चावलोकनः ॥ 273 ॥

मध्यरात्र निषिद्धस्वगृहार्चा पूजनादिकः।
मध्यरात्रोपरागादि कालवर्ज्यार्चनादिकः ॥ 274 ॥

सर्वकालाभ्यनुज्ञाता स्थानस्थ हरिदर्शनः।
अष्टाङ्ग याग मध्यानुज्ञात स्वाध्याय योगवित् ॥ 275 ॥

श्रीपराशर शाण्डिल्याद्युक्त योग स्वरूपवित्।
श्रीभाष्यकृत् सम्प्रदाय प्रपन्नजन योगदृक् ॥ 276 ॥

न्यास गद्याद्यनुगुण विनियोग विधायकः।
अर्चावतार विषय योगौचित्याभिधायकः ॥ 277 ॥

योगाङ्ग संहति न्यास स्थानाचमन साधकः।
योगोपकारि करण श्रान्ति हेतु सुषुप्तिमान् ॥ 278 ॥

खट्वादिरूप ब्रह्मादि संपरिष्वङ्ग भावनः।
शास्त्रीय शयनीयादि नियमादि विधायकः ॥ 279 ॥

स्वाराध्य भगवत्पाद सरोजन्यस्त शीर्षकः।
निद्रारम्भच्छेदकार्य माधवध्यान कीर्तनः ॥ 280 ॥

एकादश्यादिलुप्तानु याग सप्ताङ्ग यागदृक्।
द्वादश्यादि प्रभाताधः पारणास्थापन क्षमः ॥ 281 ॥

पारणादिन मध्याह्न सप्ताङ्गेज्या विचारकः।
अनेकेज्या सन्निपात लुप्तोपादान लेशकः ॥ 282 ॥

अशक्त्यवस्था स्वसमानर्त्विगादि कृतेज्यकः।
विधुर व्रति सन्न्यासि वनस्थर्त्विङ्गिषेधकः ॥ 283 ॥

सूतकादि दशात्याज्य शुचिकर्तव्यकर्मकः।
मौन शून्याशौच काल कीर्त्य ध्येय हरिप्रियः ॥ 284 ॥

आशौचकाल कर्तव्याभिधानाख्य क्रियापरः।
सर्वक्रिया प्रतिनिधि भगवन्नामकीर्तनः ॥ 285 ॥

रहस्याम्नाय निष्ठाशौच निषेध विधायकः।
ब्रह्मवित्त्वनिमित्ताद्य सङ्कोच व्याहति क्षमः ॥ 286 ॥

प्रक्रान्तोत्सव कार्यादि सूतकादि निषेधकः।
आशौचकाल कर्तव्य मानसेज्याविचारकः ॥ 287 ॥

अशौचकाल कर्तव्य सन्ध्योपास्ति प्रकारवित्।
दुष्करत्व परिज्ञान क्षुप्त पुंहर्ष वर्धकः ॥ 288 ॥

भगवद्धर्म सौकर्य विशेष व्याकृति क्षमः।
इज्योपचारवैकल्य दोषादोष विचारकः ॥ 289 ॥

सङ्कल्प सूर्योदयाधः कृत पारक्य नाटकः।
सङ्कल्प सूर्योदयाद्यपद्य व्यक्त स्ववैभवः ॥ 290 ॥

च्छात्रबद्ध ध्वजोद्भासि दशाशासौधमण्डलः।
श्रीवैकुण्ठ विनोदी सत्कविनाटक लक्ष्मदृक् ॥ 291 ॥

शान्त्यैक रसभावज्ञः शृङ्गारादि रसत्वहा।
गौडवैदर्भ पाञ्चाल मालाकार वचोधरः ॥ 292 ॥

पात्रीकृत विवेकादि गुणाधिष्ठातृ दैवतः।
सन्धिपञ्चक संवेश नाटकस्थान कोविदः ॥ 293 ॥

सर्वसङ्कट विध्वंसि विशङ्कट मनीषिदः।
विंशद्वर्षाधीत सर्व विद्यासन्तति भासुरः ॥ 294 ॥

त्रिंशद्वार श्रावित श्रीमच्छारीरक भाष्यकः।
यतीन्द्रार्पित दुर्वादि विजयार्थ पवित्रकः ॥ 295 ॥

वातनामा वातदोष व्यवस्थाकरण क्षमः।
सूक्ष्म सूक्ष्मतरात्यन्त सूक्ष्मप्रश्नोत्तर क्षमः ॥ 296 ॥

यतीन्द्र ग्रन्थ सुरभि मनस्कपदशेखरः।
शङ्करादि कुट्टम्बूर्ध न्यस्त वामपदोज्ज्वलः ॥ 297 ॥

कुट्टम्बूर्ध न्यस्तपाद सुवर्ण कटकोज्ज्वलः।
वैकुण्ठलोक स्त्रीपुंस मिथुनार्थोपपत्ति वित् ॥ 298 ॥

स्वशिल्पजित गीर्वाण दैत्यशिल्प चमत्कृतिः।
समाधि साधकस्थान शुभाश्रय निरूपकः ॥ 299 ॥

अनात्म गुणकामादि निरासादि प्रकारवित्।
महात्मात्मानात्म गुणचेष्टित ज्ञापन क्षमः ॥ 300 ॥

राघवाभ्युदयोत्कृष्ट यादवाभ्युदय प्रदः।
श्रीसेतु शठकोपादि सेवा सन्तुष्ट मानसः ॥ 301 ॥

चोलदेशीय भगवत्क्षेत्र सेवा रसाकुलः।
हस्तीश सेवाकुलात्मा नरेन्द्र मदसर्पहा ॥ 302 ॥

नरेन्द्र वन्दितस्ताक्ष्य दण्डकोत्तम दातृधीः।
पुनर्वृषाद्रि रङ्गेश सेवार्थ गमनोत्सुकः ॥ 303 ॥

आश्चर्यावह चारित्र वाजिवक्त्रादि दैवतः।
वरदाचार्य जनको जीविताखिल विष्टपः ॥ 304 ॥

हयास्य पूर्त तीर्थाहर्दृष्ट लज्जित विघ्नकृत्।
रात्रि निर्व्यूढ रङ्गेश पादरक्षासहस्रकः ॥ 305 ॥

पादरक्षा सहस्रोक्त पादुकासेवकाभिदः।
रङ्गेशदत्त कवितार्किक सिंहाभिधानकः ॥ 306 ॥

सम्प्रदाय परीशुद्धि स्थापिताचार्य सत्पथः।
सत्सम्प्रदाय रहित शास्त्रानादर बोधकः ॥ 307 ॥

सच्छास्त्र मूलान्य सम्प्रदायानादर बोधकः।
कल्यादि निगमान्त प्रवर्तकावधृति क्षमः ॥ 308 ॥

शठकोपाचार्यभाव स्थापनैक विचक्षणः।
अनुकूलाचार्यवंश्य विद्यादान सुपात्रवित् ॥ 309 ॥

मुख्यप्रधानाचार्यत्व स्थापनैक विचक्षणः।
श्रीमद्रामानुजाचार्य सम्प्रदाय विरोधहा ॥ 310 ॥

रहस्यतत्त्व त्रितय पदवीकृति भासुरः।
रहस्यतत्त्व रत्नावल्यलङ्कृत सुहृन्मनाः ॥ 311 ॥

तत्त्वरत्नावली प्रतिपाद्य सङ्ग्रहकारकः।
तत्त्वरत्नावली गम्य ज्ञान पर्याप्ति बोधकः ॥ 312 ॥

रहस्य रत्नावल्याख्य रहस्य व्याकृतिप्रियः।
न्यास्युत्तरैः प्रतिपदोक्त निष्कृति साधकः ॥ 313 ॥

श्रीतत्त्वनवनीत प्रीत हस्तिगिरि नायकः।
रहस्य नववीतोक्ति हृष्ट वेङ्कटनायकः ॥ 314 ॥

कालतामस भावादि निबन्धन विचारकः।
भगवत् त्रिस्थलावास क्रियाव्याकृति दक्षिणः ॥ 315 ॥

युगभेदाधीन वर्ण भगवद्देह दर्शनः।
श्रीतत्त्वमातृका हृष्ट भगवद्भक्त मानसः ॥ 316 ॥

रहस्य मातृका दत्त प्रपन्नान्वह दोषकः।
सारसङ्ग्रहकृत्त्र्यासि ग्राह्याग्राह्य विभागवित् ॥ 317 ॥

प्रपन्न स्वीकृतिकृत पूर्यपूर्ति विचारकः।
मानादि दशकालम्बि विवेकि फल बोधकः ॥ 318 ॥

मानप्रमेयविच्छिष्याचार्य कृत्यादि सारवित्।
व्यक्तीकृताखिलोत्कर्ष श्रीरहस्यशिखामणिः ॥ 319 ॥

श्रीमद्वाराहावतार सर्वाधिक्याभिधायकः।
वराहाख्य पुराणातिशयवर्णन दक्षिणः ॥ 320 ॥

प्रपत्तिपर वाराह चरमश्लोक बोधकः।
यामुनोक्ति परिष्कार्यञ्जलि वैभवकारकः ॥ 321 ॥

प्रपन्नविषय श्रीमदधिकप्रीति साधकः।
श्रीमद्दास्यानन्य दैवत्वादन्यार्थत्व चिह्नदृक् ॥ 322 ॥

प्रधान शतक व्यक्तीकृत मुख्यार्थ सञ्चयः।
सदानुसन्धेयार्थोपकार सङ्ग्रह कारकः ॥ 323 ॥

महोपकारवित् सारसाराख्यानकृतिप्रियः।
पराङ्कुशादि निर्व्याज रक्षणोक्ति विरोधहा ॥ 324 ॥

रहस्यतत्त्व त्रितय चुलकास्वादिताश्रितः।
अभयप्रदान सार स्पष्ट रामायणान्तरः ॥ 325 ॥

श्रीशापचार रसिक वैष्णवानादरोक्तिमान्।
श्रीशापचार भक्तानादर क्षामण कालवित् ॥ 326 ॥

न्यासापेक्षित सर्वार्थ व्यञ्जकादिम काव्यवित्।
श्रीमत्कृपा परिणत सोपान पदवीप्रियः ॥ 327 ॥

अर्चिरादि महामार्ग विरोध शमनप्रियः।
माधवात्मज भूपार्थ तत्त्वसन्देश कारकः ॥ 328 ॥

रहस्य सन्देशकृति प्रीत माधवपुत्रकः।
रहस्य सन्देश विवरणाख्य कृतितोषकः ॥ 329 ॥

माधवात्मज भूपार्थ सुभाषित विधानवित्।
हंससन्देश विवृत भगवत्प्रेम तल्लजः ॥ 330 ॥

श्रीमन्मौलिक्रमाभिख्य ग्रन्थ निर्माण कोविदः।
लोकाचार्यादि सच्छिष्यार्पित शारीरभाष्यकः ॥ 331 ॥

ब्रह्मतन्त्र स्वतन्त्रादि शिष्यार्पित रहस्यकः।
कृताशीति सहस्र द्रमिडागम परीमलः ॥ 332 ॥

मुनिवाहन भोगाख्य ग्रन्थ सम्प्रीत सज्जनः।
श्रीमन्मधुरकव्युक्ति गाथा व्याख्यान दक्षिणः ॥ 333 ॥

द्रमिडाम्नाय तात्पर्य रत्नावली विधायकः।
द्रमिडोपनिषत्सार प्रबन्धोज्ज्वल मानसः ॥ 334 ॥

श्लोकत्रयोक्त भगवदाराधन विधिक्रमः।
नवश्लोकी सङ्गृहीत ब्रह्मसूत्र विधानकः ॥ 335 ॥

प्रबन्धसार निर्माताऽऽहार नैयत्य गीतिकृत्।
मूलमन्त्रार्थ सङ्ग्राहि गाथाकृति विशारदः ॥ 336 ॥

द्वयमन्त्रार्थ सङ्ग्राहि गाथाकरण दक्षिणः।
चरमश्लोक सङ्ग्राहि गाथा सङ्ग्रह कोविदः ॥ 337 ॥

प्रपत्ति गर्भगीतार्थ गाथाकृति विचक्षणः।
लक्ष्मणाचार्य रोगघ्न पादतीर्थ प्रभावकः ॥ 338 ॥

श्रुतप्रकाशिकारक्षा रक्षिताध्यात्म भाष्यकः।
यादवाचल भद्राशासनार्थ गतिभासुरः ॥ 339 ॥

अभीतीस्तव सञ्जाताभीति रङ्गपुरी गतिः।
रङ्गप्रापित रङ्गेश गोपणार्थ स्तुतिप्रियः ॥ 340 ॥

रहस्यत्रय सरोज्जीवित चेतन सञ्चयः।
द्रमिडोपनिषत् दृष्ट सूरिबृन्दोपकारवित् ॥ 341 ॥

मोक्षैक साधनाचार्यवत्ता साधन तत्परः।
स्वाचार्यादि शरण्यान्त भक्तिक्रम विशेषवित् ॥ 342 ॥

श्रीमद्भगवदाचार्य भाव बाधक बाधकः।
शठारिनाथ योगीन्द्र गुरुशिष्यत्व साधकः ॥ 343 ॥

अपरीक्ष्य रहस्यादि प्रधान बहुदोषवित्।
भक्ति प्रकाशित गुरु वंश शिष्य निबन्धनः ॥ 344 ॥

असंभाष्यादि संभाषण निष्कृति गुरुस्मृतिः।
मोक्षार्थ शास्त्रानारम्भ हेतुधिक्कृति दक्षिणः ॥ 345 ॥

आचार्य निकट प्राप्ति हेतु षट्क निरूपकः।
सारनिष्कर्ष कुशलः प्रधान प्रतितन्त्रवित् ॥ 346 ॥

ईशाधारकथा शेषित्व नियन्तृत्व बोधकः।
जीवाधेयत्व शेषत्व नियाम्यत्व निरूपकः ॥ 347 ॥

सङ्कल्पाधीन नित्याख्य वस्तु स्थिति विशेषवित्।
शेषशेष्यादि सम्बन्ध फलितार्थ विशेषवित् ॥ 348 ॥

अर्थपञ्चक तत्त्वज्ञस्तत्त्वत्रय विशेषवित्।
स्वाधीन त्रिविधाचित् चित्स्वरूपस्थिति वृत्तिदृक् ॥ 349 ॥

प्रमाणगम्य धर्मि स्वरूप रूपक धर्मवित्।
जीवलक्षण तत्त्वज्ञो बद्धलक्षण लक्षिता ॥ 350 ॥

बद्धस्थिति प्रवृत्तिज्ञो मुक्तलक्षण लक्षिता।
नित्यस्थिति प्रवृत्तिज्ञो नित्याद्यन्योन्य भेददृक् ॥ 351 ॥

नित्यमुक्तात्म कैङ्कर्य सार्वविद्य निरूपकः।
त्रिगुणस्थिति वृत्तिज्ञः ईशलक्षण लक्षिता ॥ 352 ॥

अवताररहस्यज्ञः परव्यूहादि भेददृक्।
श्री जगत्कारणत्वादि साधकानेक युक्तिमान् ॥ 353 ॥

श्रीमन्नारायण परदेवता निर्णयक्षमः।
सर्वदेवपरब्रह्माभेद खण्डनदक्षिणः ॥ 354 ॥

त्रिमूर्तिसाम्य दमनस्त्रिमूर्त्यैक्य विनाशकः।
त्रिमूर्त्युत्तीर्ण परम देवता खण्डनक्षमः ॥ 355 ॥

त्रिमूर्त्यन्तर्गत ब्रह्म रुद्रपारम्य खण्डनः।
ब्रह्मरुद्रादि कार्यत्व कर्मवश्यत्व साधकः ॥ 356 ॥

ब्रह्मरुद्रादि भगवत् पारतन्त्र्य विचारकः।
ब्रह्मादि भगवन्मायायत्तधी ह्रास वृत्तिदृक् ॥ 357 ॥

विष्णुदर्शित सर्गोप सर्गादि विधिशम्भुदृक्।
शुभाश्रयत्व रहित ब्रह्मरुद्रादि साधकः ॥ 358 ॥

ब्रह्मरुद्रादि त्रिगुण पारवश्य निरूपकः।
ब्रह्मरुद्रादि भगवदाश्रितत्व विधायकः ॥ 359 ॥

ब्रह्मरुद्रादि भगवद्विभूतित्व निरूपकः।
ब्रह्मरुद्रादि भगवत्प्रकारत्वाभिधायकः ॥ 360 ॥

ब्रह्मरुद्रादि भगवच्छरीरत्व प्रकाशकः।
ब्रह्मरुद्रादि भगवद्दासत्व स्थापनक्षमः ॥ 361 ॥

सात्त्विकत्वोत्पत्तिहेतु मधुसूदन दृष्टिदृक्।
रजस्तमो गुणासक्ति हेतु ब्रह्मादि दृष्टिदृक् ॥ 362 ॥

ब्रह्मरुद्रादि मोक्षार्थि जनोपास्यत्व बाधकः।
ब्रह्मरुद्राद्युपास्यत्व वचोनिर्वाह कारकः ॥ 363 ॥

ब्रह्मरुद्रादि पारम्य दृक् कर्मनर्हतादि दृक्।
ब्रह्मादि भगवत्साम्य दृक्पाषण्डित्व साधकः ॥ 364 ॥

विष्णुनिग्राह्य पात्रत्व रहितेतर दैवदृक्।
क्षिप्रेतर फलप्राप्ति साधनेतर देवदृक् ॥ 365 ॥

काम्याद्यर्थाश्रितानन्त पुरुषार्थद विष्णु धीः।
अज्ञान्यदेव यजन प्रीतविष्णु प्रकाशकः ॥ 366 ॥

अज्ञान्य देवयजन फलवैकल्य साधकः।
विष्ण्वात्मकान्य देवज्ञ कर्म पौष्कल्य साधकः ॥ 367 ॥

निष्काम विष्णुसेवानुषङ्गान्य फलसिद्धिदृक्।
पराङ्कुशादि श्रीसूक्ति साधितोत्कृष्ट माधवः ॥ 368 ॥

मुमुक्षाहेतु सारज्ञश्चाधिकारि विभागवित्।
प्रपत्यवान्तरपिता वेत्तोपाय विभागवित् ॥ 369 ॥

प्रपत्यधिक्रिया पञ्च दशनिर्णय दूर्वहः।
न्यासविद्याङ्ग पञ्चत्वोपकार व्याकृतिक्षमः ॥ 370 ॥

विश्वासोत्कर्ष विहति कारण व्याहतिक्षमः।
विश्वास गोप्तृवरण शब्दार्थत्व प्रकारवित् ॥ 371 ॥

प्रपत्ति लक्षणाभिज्ञो न्यासविद्याङ्ग वेदिता।
त्रिवर्ग मोक्षजनक न्यासविद्या विशेषवित् ॥ 372 ॥

साङ्गप्रपत्यनुष्ठान प्रयोगविधि साधकः।
साङ्ग प्रपत्यनुष्ठान सकृत्व स्थापनक्षमः ॥ 373 ॥

सहेतुकृत कृत्यत्वानुसन्धान विशारदः।
स्वस्वरूपोपाय फल निष्ठात्रय विवेकवान् ॥ 374 ॥

प्रपत्युत्तर कर्तव्य कृत्यनिर्णय दक्षिणः।
भगवद्दास कैङ्कर्य दास्य द्वैविध्य वेदिता ॥ 375 ॥

भगवद्दासदास्य प्राप्तानन्यत्व विरोधहा।
श्रीमद् भागवतान्योन्य दास्यसाधन तत्परः ॥ 376 ॥

प्रपन्नान्वह सङ्ग्राह्य शास्त्रीय नियमप्रियः।
भाष्यकारोक्त शास्त्रानुमतकैङ्कर्य सारवित् ॥ 377 ॥

उल्लङ्घिताज्ञाकरणावैष्णवत्व प्रसाधकः।
प्रपन्नाज्ञातिक्रमादि प्रायश्चित्त विशेषवित् ॥ 378 ॥

एनोनिष्कृत्युदासीन प्रपन्न लघुदण्डदृक्।
आज्ञातिलङ्घि कठिन प्रपन्न नरकाप्रियः ॥ 379 ॥

प्रपन्न बुद्धि पूर्वैः प्रायश्चित्त विशेषवित्।
महापात प्रपन्न प्रसिद्ध निष्कृति वेदिता ॥ 380 ॥

कठिनानियतायुः प्रपन्नायुर्वृद्धि साधकः।
मोक्षार्थ न्यास संहार्य धीपूर्वोत्तर पापहा ॥ 381 ॥

कृतपातक नाशार्थ शरणागति वेदिता।
प्रपन्नान्वह वासार्ह स्थान व्याख्यान कोविदः ॥ 382 ॥

विकलाङ्ग न्यासविद्या पूर्णहेतुत्व साधकः।
देवान्तर दृढासक्त प्रपन्न नरकोक्तिमान् ॥ 383 ॥

विद्वदेकान्तोत्क्रमण क्रमदर्शन तोषितः।
उपायारम्भ नष्टाश्लिष्ट पूर्वोत्तर पापकृत् ॥ 384 ॥

इष्टावधूतान्यफल धीवैमुख्य प्रपन्नवित्।
विनष्टाश्लिष्ट पुण्याघ विधूनन पदार्थवित् ॥ 385 ॥

बुधपुण्याघ मित्रारि सङ्क्रान्ति व्याजबोधकः।
अर्चिरादि गतिज्ञाता सूक्ष्मदेह विसर्गवित् ॥ 386 ॥

दिव्यदेश प्राप्तिपूर्व क्रमदर्शन दक्षिणः।
मुक्तप्रपन्न सानन्द विभुज्ञान धुरन्धरः ॥ 387 ॥

मधुविद्याद्यधीकारि गत्यन्तर विशेषवित्।
मुक्त्यवस्थानन्त तारतम्यवाद विनाशकः ॥ 388 ॥

जगत्स्रष्टु परब्रह्म तुल्यानन्त विमुक्तिदृक्।
परिपूर्ण परब्रह्मानुभव श्रुति वेदिता ॥ 389 ॥

सुनिश्चितार्थ परम ब्रह्मानुभव रीतिकः।
संसार प्रतिकूलार्थ मुक्त्यवस्थानुकूल्य दृक् ॥ 390 ॥

श्रीपतित्व परब्रह्म तुल्यानन्द विमुक्तिदृक्।
सदाचार्योपदेशैकाधिकारि ज्ञापनक्षमः ॥ 391 ॥

ससत् तर्कोपदेशाधिकारि व्याकृति कोविदः।
व्याजानपेक्ष भगवत् रक्षकत्वोक्ति वारकः ॥ 392 ॥

श्रीमत् स्वातन्त्र्य कारुण्योपयोग व्याकृतिक्षमः।
प्रपत्यधिक्रियावत् विशेषणत्व निरोधकः ॥ 393 ॥

मोक्षानुपाय शरण ब्रज्यावाद विनाशकः।
प्रतिबन्ध निरासैकोपयुक्त व्याज वेदिता ॥ 394 ॥

देवस्वातन्त्र्य करुणा मूलव्याज निरासहा।
श्रीमत्सम्बन्ध मूल व्याजनिरास मतान्तकः ॥ 395 ॥

अव्याज भगवत्पात्रभाव मानोपपत्तिहा।
द्वयपूर्व श्रीपदोपलक्षकत्व विनाशकः ॥ 396 ॥

श्री विशेषण भावार्थोपाय द्वित्व विभञ्जकः।
निर्व्यूढ शरणब्रज्याविश्वासाभेद पूर्ववाक् ॥ 397 ॥

प्रपत्ति प्रार्थनाभेद वाङ्मिर्वाह विचक्षणः।
वाक्यजन्य ज्ञानमोक्षोपायत्व मतभञ्जकः ॥ 398 ॥

स्वरक्षणार्थ व्यापार निवृत्युत्थिति धूर्वहः।
प्रपत्ति मोक्षोपायत्व बाधकव्रात नाशकः ॥ 399 ॥

चरमश्लोक निखिल धर्मत्याग परत्वहा।
निषिद्ध वर्जनाधर्म भावत्वोक्त्यपनोदनः ॥ 400 ॥

उपासन स्वरूपोपायस्वरूप विरोधहा।
वर्णाश्रमादि धर्म स्वरूपरोध विनाशकः ॥ 401 ॥

ऐकान्त्यच्छेद्यन्यदेव परवर्णादि धर्महा।
भक्तिविद्या सिद्धहेतु प्ररोचन करत्वहा ॥ 402 ॥

भक्तिविद्या शिष्टलोका परिग्रह निवारकः।
भरन्यासादि सकल काल धर्मत्व भञ्जनः ॥ 403 ॥

न्यास प्रशंसको न्यास भक्त्याधिक्य प्रदर्शकः।
अनुकूलत्व सङ्कल्पाद्यवश्यम्भाव वेदिता ॥ 404 ॥

विश्वासाङ्ग महत्वान्तराय भङ्ग विचक्षणः।
प्रपन्न भगवत्प्रेम तारतम्य विधायकः ॥ 405 ॥

गुरुभक्ति लघुन्यास फलैक्योक्ति विचक्षणः।
पूर्व पूर्वाकृतांशार्थ पुनः प्रपदनोक्तिमान् ॥ 406 ॥

ऐहिकार्थ न्यासकर्तृ हेतु वैकल्यसाधकः।
अभियानादि पञ्चावसर कृत्य फलोक्तिमान् ॥ 407 ॥

विष्णुभक्त चतुर्थादि ब्राह्मण्य विनिवारकः।
विधुराति स्वजात्युक्त धर्मालङ्घन दृष्टिमान् ॥ 408 ॥

निर्व्यूढ विधुरब्रह्ममेध संस्कृति सूक्तिकः।
यज्ञेश विधुरान्नादनोक्ति निर्वाह दक्षिणः ॥ 409 ॥

अतिदेशानर्हकारि सूनुवृत्त प्रकाशकः।
भगवद्भक्त शूत्रादि धीदानादि कृतिप्रियः ॥ 410 ॥

चैत्तकायिक शूद्रत्व भेदव्याख्यान दक्षिणः।
नारायणैक निष्ठेति वचनार्थ प्रदर्शकः ॥ 411 ॥

निषिद्ध त्याग धर्माख्यामुख्यार्थत्व विभञ्जकः।
श्रीमत् प्रभाव सन्त्रातोपाय माहात्म्य रक्षकः ॥ 412 ॥

भगवत्क्षेत्र माहात्म्य दृक् वैष्णव महत्ववित्।
सौङ्कारमूल मन्त्राष्टाक्षरत्व त्राणदीक्षितः ॥ 413 ॥

द्वयमूल मनुव्याख्या रूपत्वपरिशोधकः।
मूलमन्त्राष्टाक्षर पद तत्त्वार्थ विशेषवित् ॥ 414 ॥

मूलमन्त्र महावाक्य योजनाशतकारकः।
द्वयप्रभाव विज्ञाता द्वयशब्द निरुक्तिवित् ॥ 415 ॥

द्वय त्रयीमूल तान्त्र मन्त्रत्व स्थापन क्षमः।
लक्ष्मी पुरुषकारत्व मानज्ञः श्रीपदार्थवित् ॥ 416 ॥

द्वयमन्त्र पदप्रात प्रत्येक व्याकृति प्रियः।
श्रीशोपायान्तर स्थानापत्ति सारार्थ शोधकः ॥ 417 ॥

कार्पण्य गोप्तृवरण सार्थोपायत्व याचनः।
उपाय वरणाध्यात्म निक्षेपाङ्गित्व साधकः ॥ 418 ॥

द्वयोत्तरार्थ गम्यार्थ पुरुषार्थ निरूपकः।
द्वयमन्त्र महावाक्य योजनात्रय साधकः ॥ 419 ॥

श्रीकृष्ण चरमश्लोकावतार व्याकृति क्षमः।
चरमश्लोक धर्मोक्ति वेद्य निर्णय कोविदः ॥ 420 ॥

पुरुषोत्तम धीमोक्ष हेतुत्व मतभञ्जकः।
अवतार रहस्यज्ञानादि मोक्षकरत्वहा ॥ 421 ॥

चरमश्लोक धर्मत्यागानुवाद मतप्रियः।
प्रपत्ति सर्वधर्मत्यागाङ्गोक्ति विधिभञ्जकः ॥ 422 ॥

क्षेत्रज्ञोपासनोपाय नित्याशक्तत्व भञ्जकः।
एकवाक्य विधित्वानुवादत्वानुपपत्ति वित् ॥ 423 ॥

गुरूपाय लघूपाय गीः प्ररोचकता प्रियः।
भक्तिविद्या मन्दधीकाधिकारित्व मतान्तकः ॥ 424 ॥

उपासना मन्दविश्वासाधिकारित्व नाशकः।
उपासना लोकसङ्ग्रहार्थित्व मतमारकः ॥ 425 ॥

प्रपत्तिरूप सकल धर्मत्याग मतान्तकः।
प्रपत्यनुष्ठानकाल सर्वधर्म विमुक्तिहा ॥ 426 ॥

प्रदक्षिण प्रणामाद्यनुज्ञा कैङ्कर्य हेतुदृक्।
अवज्ञाकृत भक्तादि जन्मचिन्तादि दोषदृक् ॥ 427 ॥

शास्त्रव्यवस्था सिद्ध्यर्थ भक्तजन्मादि चिन्तकः।
सारकल्क स्वरूप श्रीमत्कैङ्कर्य विभागदृक् ॥ 428 ॥

सम्बन्धधी मुखानेक मोक्षहेतु मतान्तकः।
चरमश्लोक निखिल धर्मत्यागि षडर्थवित् ॥ 429 ॥

चरमश्लोकैक शब्द षडर्थोक्ति विचक्षणः।
परतन्त्र स्वभावात्म विध्यनर्हत्व भञ्जकः ॥ 430 ॥

परतन्त्रात्म कर्तृत्व स्वरूप विशदोक्तिमान्।
श्रीमत्कर्तृ प्रेरकानुमन्तृ कारयितृत्व वित् ॥ 431 ॥

क्रियमाणाद्य विध्वंसि प्रपत्ति प्रतिपादकः।
ब्रह्म विद्यारम्भ नष्टाश्लिष्ट कर्म स्वरूपवित् ॥ 432 ॥

प्रियाप्रियोपसङ्क्रान्त विद्वत्पुण्याद्य वेदिता।
प्राप्त्यन्तराय वित् साध्योपाय रोधि विशेषवित् ॥ 433 ॥

प्रतिकूलानुभूत्यादि हेतु पापस्वरूपवित्।
गुणाष्टकाविर्भावोक्ति वेद्यार्थ परिशोधकः ॥ 434 ॥

कैवल्याख्य पुमर्थ स्वरूप नित्यत्व बाधकः।
मा शुचः शब्द निर्णुन्न शोकानेक विधत्ववित् ॥ 435 ॥

आचार्य कृत्यविच्छिष्य कृत्यवेदन दीक्षितः।
यतीन्द्र माहानसिक संप्रदाय सुधाप्रदः ॥ 436 ॥

विरोध परिहार श्री सारसाराक्षि युग्मदः।
सौम्य कार्तिक राकाश्री पर्यङ्कारोहण प्रियः ॥ 437 ॥

अत्रार्चया जगत्सर्वं पालयन् जयति ह्यसौ ॥ 438 ॥

इदं गुरोर्दिव्यसहस्रनाम
स्तोत्रं महार्थं सरसार्थबोधम्।
पठन्ति ये सर्वं समीहितार्थं
सिद्धिं लभन्तेऽत्र परत्र चापि ॥ 439 ॥

फलानपेक्षोपि गुरोः प्रसादात्
सिद्धिं समाप्नोत्यनुषङ्गसिद्धाम्।
श्रमापनोदाय कृतावगाहं
गङ्गा पवित्रीकुरुते हि जन्तुम् ॥ 440 ॥

गोपालदासस्य गुरुत्तमाङ्घ्रि
भक्तिस्रवन्ती हृदयाब्ज कोशात्।
निर्गत्य तन्नामसहस्ररूपा
तद्भ्यायिनः सर्वजनान् पुनाति ॥ 441 ॥

॥ इति श्री देशिक दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥